॥ श्री हनुमते नमः ॥

हनुमान चालीसा

Hanuman Chalisa

सम्पूर्ण पाठ – हिंदी अर्थ सहित

Complete Text with Hindi Meaning

रचयिता: गोस्वामी तुलसीदास जी

भाषा: अवधी हिंदी | चौपाइयाँ: ४० | दोहे: ३

@nandgramdham

॥ परिचय ॥

हनुमान चालीसा भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय भक्ति स्तोत्रों में से एक है। इसकी रचना महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने सोलहवीं शताब्दी में अवधी भाषा में की थी। 'चालीसा' शब्द 'चालीस' से बना है जिसका अर्थ है चालीस – इसमें ४० चौपाइयाँ हैं।

इस स्तोत्र में भगवान श्री हनुमान जी के गुण, पराक्रम, भक्ति और महिमा का वर्णन किया गया है। प्रतिदिन, विशेषकर मंगलवार और शनिवार को, इसका पाठ करना अत्यंत शुभ माना जाता है।

@nandgramdham

॥ मंगलाचरण – दोहे ॥

दोहा – १

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥

अर्थ: श्री गुरु के चरण-कमलों की धूल से अपने मन रूपी दर्पण को स्वच्छ करके, मैं श्री रघुकुल-शिरोमणि के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ, जो धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष – चारों फल देने वाला है।

दोहा – २

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार॥

अर्थ: अपने आपको बुद्धिहीन जानकर मैं हे पवनपुत्र! आपका स्मरण करता हूँ। आप मुझे बल, बुद्धि एवं विद्या प्रदान करें और मेरे सभी कष्टों तथा दोषों को दूर करें।

@nandg...

॥ चौपाई १ से १० ॥

॥ चौपाई १ ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥

अर्थ: *हे हनुमान जी! आपकी जय हो। आप ज्ञान और गुणों के सागर हैं। हे कपीश्वर! तीनों लोकों में आपका यश प्रकाशित है।*

॥ चौपाई २ ॥

राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि पुत्र पवन सुत नामा॥

अर्थ: *आप श्री राम के दूत तथा अतुलनीय बल के धाम हैं। माता अंजनि के पुत्र और पवनदेव के सुत नाम से विख्यात हैं।*

॥ चौपाई ३ ॥

महावीर विक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥

अर्थ: *आप महावीर, पराक्रमी और वज्र के समान अंगों वाले हैं। आप दुर्बुद्धि को दूर करते हैं और सद्बुद्धि के साथी हैं।*

॥ चौपाई ४ ॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा॥

अर्थ: *आपका वर्ण सोने जैसा है और सुंदर वेश में सुशोभित हैं। कानों में कुंडल और घुंघराले केश आपको और भी मनोहर बनाते हैं।*

॥ चौपाई ५ ॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजे।
काँधे मूँज जनेऊ साजे॥

अर्थ: *आपके हाथ में वज्र और ध्वजा सुशोभित है। आपके कंधे पर मूँज का जनेऊ धारण किया हुआ है।*

॥ चौपाई ६ ॥

शंकर सुवन केसरी नंदन।
तेज प्रताप महा जग बंदन॥

अर्थ: *आप शंकर जी के अंश और केसरी के पुत्र हैं। आपका तेज और प्रताप महान है – सारा जगत आपकी वंदना करता है।*

॥ चौपाई ७ ॥

विद्यावान गुणी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥

अर्थ: *आप विद्यावान, गुणी और अत्यंत चतुर हैं। श्री राम का कार्य करने के लिए आप सदा तत्पर रहते हैं।*

॥ चौपाई ८ ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥

अर्थ: *आप प्रभु की कथा सुनने के परम रसिक हैं। श्री राम, लक्ष्मण और सीता जी आपके मन में सदा बसे रहते हैं।*

॥ चौपाई ९ ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा॥

अर्थ: *आपने सूक्ष्म रूप धारण कर माता सीता को दर्शन दिया और विकराल रूप धारण करके लंका को जला दिया।*

॥ चौपाई १० ॥

भीम रूप धरि असुर संहारे।
रामचंद्र के काज सँवारे॥

अर्थ: *आपने विशाल रूप धारण करके असुरों का संहार किया और इस प्रकार श्री रामचंद्र जी के सभी कार्य सिद्ध किए।*

॥ चौपाई ११ से २० ॥

॥ चौपाई ११ ॥

लाय सँजीवन लखन जियाये।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये॥

अर्थ: *आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण जी को जीवनदान दिया। श्री रघुवीर ने प्रसन्न होकर आपको हृदय से लगा लिया।*

॥ चौपाई १२ ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरत सम भाई॥

अर्थ: *रघुपति श्री राम ने आपकी बहुत प्रशंसा की और कहा – 'तुम मुझे भरत के समान प्रिय भाई हो।'*

॥ चौपाई १३ ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥

अर्थ: *हजार मुखों वाले शेषनाग भी तुम्हारा यश गाते हैं। ऐसा कहकर श्रीपति (श्री राम) ने आपको कण्ठ से लगा लिया।*

॥ चौपाई १४ ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा॥

अर्थ: *सनकादि ऋषि, ब्रह्मा आदि देवता, मुनिगण, नारद जी, माँ सरस्वती और शेषनाग – सभी आपकी महिमा का गान करते हैं।*

॥ चौपाई १५ ॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कबि कोबिद कहि सकैं कहाँ ते॥

अर्थ: *यमराज, कुबेर और दिशाओं के स्वामी – इनकी तो बात ही क्या, कवि और पण्डित भी आपका पूर्ण वर्णन करने में असमर्थ हैं।*

॥ चौपाई १६ ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥

अर्थ: *आपने सुग्रीव पर उपकार किया – उन्हें श्री राम से मिलाकर उनका राज्य वापस दिलाया।*

॥ चौपाई १७ ॥

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना॥

अर्थ: *विभीषण ने आपकी सलाह मानी और वे लंका के राजा बने – यह बात सारा संसार जानता है।*

॥ चौपाई १८ ॥

जुग सहस्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥

अर्थ: *हजारों योजन दूर स्थित सूर्य को आपने बचपन में मीठा फल समझकर निगल लिया था।*

॥ चौपाई १९ ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥

अर्थ: *श्री राम की अंगूठी मुँह में रखकर आप समुद्र लाँघ गए – आप जैसे महाबली के लिए यह कोई आश्चर्य नहीं।*

॥ चौपाई २० ॥

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥

अर्थ: *संसार में जितने भी कठिन कार्य हैं, वे सब आपकी कृपा और अनुग्रह से सरल हो जाते हैं।*

@nandgram_dham

॥ चौपाई २१ से ३० ॥

॥ चौपाई २१ ॥

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥

अर्थ: *आप श्री राम के द्वार के रक्षक हैं। आपकी आज्ञा के बिना वहाँ कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता।*

॥ चौपाई २२ ॥

सब सुख लहैं तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डरना॥

अर्थ: *जो आपकी शरण में आता है उसे सभी सुख प्राप्त होते हैं। जब आप रक्षक हैं तो फिर किसी से क्या डरना।*

॥ चौपाई २३ ॥

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक ते काँपै॥

अर्थ: *आप ही अपने अपार तेज को सँभाल सकते हैं। आपकी एक हुंकार मात्र से तीनों लोक काँपने लगते हैं।*

॥ चौपाई २४ ॥

भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै॥

अर्थ: *भूत, पिशाच और दुष्ट शक्तियाँ निकट नहीं आ सकतीं – जब महाबली हनुमान जी का नाम लिया जाता है।*

॥ चौपाई २५ ॥

नासै रोग हरे सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥

अर्थ: *वीर हनुमान जी का निरंतर जप करने से सभी रोग नष्ट होते हैं और समस्त पीड़ाएँ दूर हो जाती हैं।*

॥ चौपाई २६ ॥

संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥

अर्थ: *जो मन, कर्म और वचन से हनुमान जी का ध्यान करता है, उसे हनुमान जी सभी संकटों से मुक्त करते हैं।*

॥ चौपाई २७ ॥

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिनके काज सकल तुम साजा॥

अर्थ: *तपस्वी राजा श्री राम सबसे श्रेष्ठ हैं और उनके समस्त कार्यों को आपने सफलतापूर्वक संपन्न किया है।*

॥ चौपाई २८ ॥

और मनोरथ जो कोई लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै॥

अर्थ: *जो भी कोई किसी मनोकामना से आपके पास आता है, उसे जीवन में असीम फल की प्राप्ति होती है।*

॥ चौपाई २९ ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा॥

अर्थ: *सत, त्रेता, द्वापर और कलि – चारों युगों में आपका प्रताप विख्यात है और जगत में आपका यश फैला है।*

॥ चौपाई ३० ॥

साधु सन्त के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे॥

अर्थ: *आप साधु-संतों के रक्षक हैं, असुरों का नाश करने वाले हैं और श्री राम के परम प्रिय हैं।*

@nandgram_dham

॥ चौपाई ३१ से ४० ॥

॥ चौपाई ३१ ॥

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता॥

अर्थ: *आठों सिद्धियाँ और नवों निधियाँ देने का वरदान माता जानकी (सीता जी) ने आपको प्रदान किया है।*

॥ चौपाई ३२ ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा॥

अर्थ: *राम-नाम रूपी अमृत रसायन आपके पास है। आप सदा श्री रघुपति के परम दास बने रहते हैं।*

॥ चौपाई ३३ ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुख बिसरावै॥

अर्थ: *आपका भजन करने से श्री राम की प्राप्ति होती है और जन्म-जन्मांतर के सभी दुख भूल जाते हैं।*

॥ चौपाई ३४ ॥

अन्त काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई॥

अर्थ: *अंत समय में भक्त रघुवर के धाम को प्राप्त होता है और जहाँ भी जन्म ले वहाँ हरिभक्त कहलाता है।*

॥ चौपाई ३५ ॥

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥

अर्थ: *अन्य देवताओं का ध्यान न करें – केवल हनुमान जी की सेवा करने से ही समस्त सुखों की प्राप्ति होती है।*

॥ चौपाई ३६ ॥

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥

अर्थ: *जो बलवीर हनुमान जी का स्मरण करता है उसके सभी संकट कट जाते हैं और समस्त पीड़ाएँ मिट जाती हैं।*

॥ चौपाई ३७ ॥

जय जय जय हनुमान गोसाईं।

कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥

> **अर्थ:** *हे स्वामी हनुमान जी! आपकी जय हो, जय हो, जय हो। गुरुदेव की भाँति मुझ पर कृपा कीजिए।*

॥ चौपाई ३८ ॥

जो सत बार पाठ कर कोई।

छूटहि बंदि महा सुख होई॥

> **अर्थ:** *जो व्यक्ति इस चालीसा का सौ बार पाठ करता है, उसकी सभी बंधनों से मुक्ति होती है और महासुख की प्राप्ति होती है।*

॥ चौपाई ३९ ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।

होय सिद्धि साखी गौरीसा॥

> **अर्थ:** *जो इस हनुमान चालीसा का पाठ करता है उसे सिद्धि प्राप्त होती है – इसके साक्षी स्वयं भगवान शंकर हैं।*

॥ चौपाई ४० ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा।

कीजे नाथ हृदय मँह डेरा॥

> **अर्थ:** *तुलसीदास सदा भगवान के सेवक हैं – हे नाथ! आप मेरे हृदय में अपना स्थायी निवास कीजिए।*

@nandgram_dham

॥ समापन दोहा ॥

समापन दोहा

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

अर्थ: हे पवनपुत्र! आप संकट हरने वाले और मंगलमूर्ति हैं। हे देवराज! श्री राम, लक्ष्मण और माता सीता जी सहित मेरे हृदय में निवास कीजिए।

॥ इति श्री हनुमान चालीसा ॥

॥ जय श्री राम – जय हनुमान ॥

हनुमान चालीसा पाठ विधि

- स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहनें।
- हनुमान जी की प्रतिमा या चित्र के सामने बैठें।
- दीप प्रज्वलित करें एवं सिंदूर, फूल, प्रसाद अर्पित करें।
- शांत मन से एकाग्रता के साथ पाठ करें।
- विशेष फल के लिए मंगलवार व शनिवार को ११ या २१ बार पाठ करें।

@nandgrandha